International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(2):108-110
© 2017IJSR
www.anantaajournal.com
Received:21-01-2017
Accepted: 22-02-2017

संजीत कौर
शोधार्थी, संस्कृत विभाग,
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय,
रोहतक, हरियाणा, भारत।

Correspondence
संजीत कौर
शोधार्थी, संस्कृत विभाग,
महर्षि दयानन्द
विश्वविद्यालय,रोहतक, हरियाणा,
भारत।

महाभारतकालीन प्रमुख नदियों का वर्णन एवं स्थिति

संजीत कौर

प्रस्तावना

भारत को नदियों का देश कहा जाता है। इसलिए भारतीय संस्कृति में नदियों का विशेष महत्व है। यदि भारतीय संस्कृति एवं इतिहास में से नदियों को निकाल दिया जाए तो वह अपूर्ण रह जाएगा। क्योंकि भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता का उदय नदियों के तटों से ही आरम्भ होता है। इसी कारण महाभारत नामक महाकाव्य एवं इतिसकाव्य में अनेक नदियों का वर्णन प्राप्त होता है इनकी नामावली महाभारत के भीष्म पर्व में प्राप्त होती है जो इस प्रकार से है – गंगा, सिन्धु, सरस्वती, गोदावरी, नर्मदा, बाहुदा, महानदी, शतद्रू, चन्द्रभागा, यमुना, दृषद्वती, विपाशा, स्थूलबालुका, वेत्रावती, कृष्णवेवा, इरावती, वितस्तता, पयोष्णी, देविका, वेदस्मृता, वेदवती, त्रिादिवा, इक्षुला, कृमि, करीषिणी, चित्रावाहा, चित्रासेना, गोमती, धूतपापा, वन्दना, कौशिकी, त्रिादिवा, कृत्वा, निचिता, लोहितारणी, रहस्या, शतकुम्भा, सरयू, चर्मण्वती, हस्तिसोमा, दिक्, शरावती, वेणा, भीमरथी, कावेरी, चुलुका, वाणी, सतबला, सिन्धु, पुरमालिनी, पूर्वाभिरामा, वीरा, भीमा, ओघवती, पाशाशिनी, पापहरा, महेन्द्रा, पाटलावती, करीषिणी, असिक्मी, कुशचीरा, मकरी, प्रवरा, मेना, हेमा, द्यृतवती पुरावती, अनुष्णा, शैत्वा, काफी, सदावीरा, अधृष्या, कुशधारा, सदाकान्ता, तमसा, मन्दाकिनी, कोसी, कृष्णा, वैतरणी, अनंग, मारिषा, सर्वा आदि अनेक नदियों का जल भारतवासी पीते थे।[1]

इन सभी नदियों को संसार की माताएँ कहा गया है तथा सभी नदियाँ महान पुण्य फल देने वाली हैं।

विश्वस्य मातरः सर्वाः सर्वाश्चैव महाफलाः।
तथा नद्यस्तवप्रकाशाः शतशोऽथ सहस्रशः।।[2]

इनमें से प्रमुख नदियों जैसे गंगा, यमुना, सरस्वती तथा गोदावरी नदी का वर्णन यहाँ किया जाएगा।

गंगा

गंगा नदी भारतवर्ष की सर्वश्रेष्ठ एवं सर्वप्रधान नदी है। महाभारत में गंगा के उद्गम एवं उसके पृथ्वी पर अवतीर्ण होने की कथा मिलती है जिसके अनुसार राजा भगीरथ ने अपने पित्तरों के उद्धार के लिए गंगा को पृथ्वी पर लाने के लिए हिमालय पर्वत पर एक हजार दिव्य वर्षों तक कठोर तपस्या की थी, जिससे प्रसन्न होकर गंगा नदी भगवान शिव की सहायता से पृथ्वी लोक पर अवतीर्ण हुई थी।

ततः पुण्यजला रम्या राज्ञा समनुचिन्तिता।
ईशानं च स्थितं दृष्ट्वा गगनात् सहसाच्युता।।[3]

हिमालय पर्वत से गिरने के बाद गंगा का एक नाम भगीरथी प्रसिद्ध हुआ क्योंकि राजा भगीरथ के तप से यह पृथ्वी पर आयी थी। भगीरथी गंगा की सीधी धारा गंगोत्तरी से देवप्रयाग होती हुई हरिद्वार आयी और अन्य धाराएँ अन्य मार्गों से प्रवाहित होकर पुनः गंगा में मिल जाती है। कैलास पर्वत के पास गंगा का नाम अलकन्दा है। यह देवप्रयाग से आकर सीधी धारा में मिल जाती है।[4] हिमालय पर्वत पर गिरि हुई गंगा सात धाराओं में बंटकर समुद्र में मिल जाती है। इसकी सात धाराएँ– गंगा, यमुना, सरस्वती, रथस्था, सरयू, गोमती तथा गण्डकी मानी जाती है।

पुरा हिमवतश्चैषा हेमश्रृङ्गाद् विनिस्सृता।
गङ्गा गत्वा समुद्राम्भः सध्या समपद्यत।।[5]

संसार में जो मनुष्य इन नदियों का जल पीते हैं उनके सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं। गंगा नदी देवलोक में अलकनन्दा से, पितृलोक में वैतरणी तथा संसार में गंगा नाम से प्रसिद्ध है।

देवेषु गङ्गा गन्धर्व प्राप्नोत्यलकनन्दताम्।
तथा पितॄन् वैतरणी दुस्तरा पापकर्मभिः।।
गङ्गा भवति वै प्राप्य कृष्ण द्वैपायनोऽब्रवीत्।[6]

महाभारत में भीष्म को गंगा की माता कहा गया है। हस्तिनापुर नगर भी गंगा नदी के किनारे पर ही बसा हुआ था। इसी कारण बचपन में द्वेष के कारण दुर्योधन ने भीम के खाने में विष मिलाकर उसे मृतप्रायः समझकर गंगा के जल में डुबो दिया था।[7]
एक स्थान पर अर्जुन गंगा की पवित्राता के विषय में कहते हैं कि गंगा के तट पर आने के लिए कोई नियम नहीं है। मनुष्य किसी भी समय रात में आए या दिन में आए।

भुक्तो वाप्यथवाभुक्तफो रात्रावहनि श्वेचर।
न कालनियमो ह्यस्ति गङ्गा प्राप्य सरिद्वराम्।।[8]

अत्यन्त कल्याणमयी गंगा नदी सब प्रकार की बाधाओं को दूर करने वाली तथा स्वर्गलोक को प्राप्त कराने वाली है।

असम्बाधा देवनदी स्वर्गसम्पादनी शुभा।[9]

इस प्रकार महाभारत में गंगा को अत्यन्त पवित्र नदी माना जाता था जो तीर्थस्वरूप थी। वर्तमान में भी गंगा को मोक्ष प्रदान करने वाली नदी माना जाता है। गंगा नदी के किनारे स्थित गंगाद्वार (हरिद्वार) को परम पवित्र स्थान माना जाता है। नदी को त्रिपथगा भी कहा गया है, क्योंकि यह नदी स्वर्गलोक, पाताललोक तथा पृथ्वी पर गमन करने वाली है–

एतत् ते सर्वमाख्यातं गङ्गा त्रिापथगा यथा।[10]

आधुनिक युग में गोमुख गलेशियर जो गंगोत्तरी तीर्थ से 12 मील दूर उत्तर में स्थित है, वहाँसे बहती हुई गंगा गंगोत्तरी पहुँचती है। गंगोत्तरी से उत्तरकाशी एवं टिहरी जनपदों में बहती हुई देवप्रयाग पहुँचती है। उद्गम स्थान से देवप्रयाग तक इसका नाम भागीरथी है। देव प्रयाग में अलकनन्दा का संगम होता है और यह गंगा नाम से जानी जाती है। हरिद्वार के पास यह मैदानी क्षेत्रा में प्रवेश करती है। वहाँ से उत्तर प्रदेश, बिहार एवं बंगाल से बहती हुई यह दो भागों में बंट जाती है। पूर्वी बंगाल में पद्मा के नाम से तथा पश्चिमी बंगाल में हुगली नदी के रूप में बहती हुई बंगाल की खाड़ी में गिर जाती है।[11] वर्तमान में यह नदी पवित्रता का प्रतीक मानी जाती है।

यमुना नदी

यमुना नदी गंगा की प्रमुख सहायक नदी है जो हिमालय पर्वतमाला में स्थित यमुनोत्री से निकलकर प्रयाग उत्तरप्रदेश में गंगा नदी में मिल जाती है। महाभारत में यमुना का वर्णन आदि पर्व में सत्यवती–शांतनु के विवाह–प्रसंग में आया है। भीष्म के पिता शांतनु ने यमुनावर्ती तट पर रहने वाली धीवर की पुत्री सत्यवती से विवाह किया था।

स कदाचिद् वनं यातो यमुनामभितो नदीम्।
ततो विवाहे निवृत्ते स राजा शान्तनुर्नृपः।।[12]

महाभारत में महर्षि वेदव्यास ने यमुना नदी को अत्यन्त पवित्र नदी कहा है। जो मनुष्य यमुना नदी के जल को पीता है उसके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं।

गङ्गा च यमुनां चैव प्लक्षजातां सरस्वतीम्।
रथस्थां सरयूं चैव गौमतीं गण्डकीं तथा
अपर्युषितपापास्ते नदीः सप्त पिबन्ति ये।[13]

महाभारत के रचियता महर्षि कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास का जन्म भी माता सत्यवती के गर्भ से यमुना नदी के द्वीप पर हुआ था। महर्षि पराशर वेदव्यास के पिता थे।
महर्षि पराशर यमुना नदी को पार करने के लिये सत्यवती की नाव में बैठे थे, जहाँ पर पाराशर मुनि ने सत्यवति के गर्भ में वेदव्यास को स्थापित किया था।

अथ धर्मविदां श्रेष्ठः परमर्षि पराशरः।
आजगाम तरीं धीमांस्तरिष्यन् यमुनां नदीम्।।[14]

और कहा था कि सन्तान के जन्म के पश्चात् तुम फिर से कन्या ही हो जाओगी।

ततो मामाह स मुनिर्गर्भमुत्यसृज्य मामकम्।
द्वीपेऽस्या एव सरितः कन्यैव त्वं भविष्यसि।।[15]

श्रीमद्भगवत पुराण के दशम स्कंध में श्रीकृष्ण का जन्म तथा उनकी विविध लीलाओं के प्रसंग में यमुना नदी का अनेक बार वर्णन आया है।[16]
महाभारत में अश्व नदी का चर्मण्वती में, चर्मण्वती का यमुना में और यमुना का गंगा में मिलने का उल्लेख है।[17]
यमनोत्री इस नदी का उद्गम स्थल है, जो हिमालय श्रृंखला के कालिन्द नामक प्रदेश में स्थित है। इस कारण इसे कालिंदी भी कहते हैं। प्रयाग में यह गंगा नदी के साथ मिल जाती है। इस कारण यह स्थान यमुना–गंगा संगम के रूप में प्रसिद्ध है।[18]
वृन्दावन भी यमुना के तट पर बसा हुआ था जहाट्ट पर श्रीकृष्ण ने अपनी बाल लीलाएँ की थी। यमुना नदी में रहने वाले कालिया नाग का अन्त करके यमुना के पानी को विष रहित किया था।[19]
इस प्रकार यमुना गंगा की तरह ही भारतवर्ष में पवित्र नदी मानी जाती है।

सरस्वती

सरस्वती प्राचीन भारत की प्रसिद्ध नदी है। वैदिक काल में सरस्वती को अत्यन्त पवित्र नदी माना जाता था। ऋग्वेद के नदी सूक्त में सरस्वती 'नदी देवता' के रूप में वर्णित है। उत्तर वैदिककाल में सरस्वती को बुद्धि की देवी तथा ब्रह्मा की पत्नी के रूप में इसकी स्तुति के गीत गाये गए हैं।[20]
महाभारत में भी सरस्वती नदी के किनारों पर स्थित सभी तीर्थों का वर्णन किया गया है।[21] भगवान श्रीकृष्ण ने पूर्वकाल में सरस्वती नदी के तट पर 12 वर्षों तक चलने वाला यज्ञ किया था।

अवकृष्टोत्तरासङ्गः कृशो धर्मनिसंतत्।
आसी कृष्ण सरस्वत्यां सत्रो द्वादशवार्षिके।।[22]

महाभारत में कहा गया है कि सरस्वती नदी के संगम में स्नान करने से मनुष्य को हजारों गायों के दान का फल मिलता है तथा ऐसा व्यक्ति अपने तेज से अग्नि की भांति प्रकाशित होता है।[23]
शल्य पर्व में सरस्वती नाम की सात और नदियाँ बतायी हैं, जो सम्पूर्ण जगत में फैली हुई हैं। उनके नाम इस प्रकार से हैं – सुप्रभा, कांचनाक्षी, विशाला, मनोरमा, सरस्वती, ओघवती, सुरेणु और विमलोदका। पुष्कर में ब्रह्मा जी के आह्वान करने पर सरस्वती नदी सुप्रभा के नाम से प्रकट हुई।

राजन् सप्त सरस्वत्यो याभिर्प्याप्तमिदं जगत्
सुप्रभा काञ्चनाक्षी च विशाला च मनोरमा
सरस्वती चौघवती सुरेणुर्विमलोदका।।[24]

`नैमिष्यारण्यतीर्थ में मुनियों के आह्वान पर कांचनाक्षी नाम से प्रकट हुई है।[25] राजा गय द्वारा अपने यज्ञ में बुलायी गई सरस्वती गयदेश में विशाला के नाम प्रकट हुई।[26]
उदालक ऋषि के यज्ञ में सरस्वती मनोरमा नाम से प्रकट हुई।

पूज्यमाना मुनिगणैर्वल्कलाजिनसंवृतैः।
मनोरमेति विख्याता सा हि तैर्मनसा कृता।।[27]

कुरुक्षेत्र में राजा कुरु द्वारा यज्ञ करने पर बुलायी गई सरस्वती सुरेणु के नाम से प्रकट हुई थी।

सुरेणुर्त्रषभे द्वीपे पुण्ये राजर्षि सेविते।
कुरोश्च यजमानस्य कुरुक्षेत्रे महात्मनः।
आजगाम महाभागा सरिच्छ्रेष्ठा सरस्वती।।[28]

गंगाद्वार में सुरेणु के नाम से प्रकट हुई, कुरुक्षेत्र में वसिष्ठ के द्वारा स्मरण की जाती हुई सरस्वती ओघवती नाम से प्रसिद्ध हुई।[29] हिमालय पर्वत पर विमलोदका नाम से प्रकट हुई थी।[30]
ये सातों सरस्वतियाँ एकत्र होकर सप्तसारस्वत तीर्थ में निवास करती हैं।[31] इस प्रकार सरस्वती नदी प्राचीन काल में हरियाणा तथा राजस्थान में प्रवाहित होती हुई कच्छ की खाड़ी में गिरती थी। महाभारत में इसे दृश्यादृश्य नदी कहा गया है क्योंकि इस नदी ने उसी समय लुप्त होना आरम्भ कर दिया था। सतलुज और यमुना नदी के बीच में स्थित ब्रह्मावर्त में यह नदी बहती थी।
वर्तमान सुरसुती नदी ही सरस्वती नदी थी जो थानेश्वर की पश्चिम दिशा में बहती हुई पटियाला जिले में पश्चिम की ओर बहती हुई घग्घर नदी से मिलती थी तथा हिसार से गुजरती हुई भटनैर के पास यह नदी विलुप्त हो जाती थी।[32] जहाँ पर विलशन नामक तीर्थ था।[33]

गोदावरी नदी

गोदावरी नदी दक्षिण भारत की अत्यन्त प्रसिद्ध नदी है। महाभारत काल में भी यह नदी इसी नाम से प्रसिद्ध थी। भीष्म पर्व में आयी नदियों की नामावली में गंगा, सिन्धु तथा सरस्वती के बाद गोदावरी नदी का ही नाम आया है।[34]

नदीं पिबन्ति विपुलां गङ्गा सिंधु सरस्वतीम्।
गोदवरी नर्मदां च बाहुदां च महानदीनाम्।।

वनपर्व के तीर्थयात्रा पर्व में युधिष्ठिर भी विभिन्न तीर्थों की यात्रा करते हुए दक्षिण भारत पहुँचते हैं, जहाँ वे गोदावरी नदी में स्नान करके पवित्र तीर्थों का दर्शन करते हैं।[35]
गोदावरी को सप्तगोदावरी कहा गया है। इसकी सात और शाखाएँ मानी गई हैं – वसिष्ठा, कौशिकी, गौतमी, भारद्वाजी, तुल्या, बुद्धगौतमी तथा आत्रेयी।

सप्तगोदावरीं स्नात्वा नियतो नियताशनः।[36]

ऐसी मान्यता भी है कि प्रजा तथा गायों के कल्याण के लिए महर्षि गौतम ने वर्षा न होने की स्थिति में ब्रह्मगिरि पर्वत की गुफा से इस नदी की उत्पत्ति की थी, जिस कारण से इसे गौतमी भी कहते हैं।[37]
रामायण में भी इस नदी का वर्णन मिलता है। रावण द्वारा सीता के अपहरण का समाचार जटायु द्वारा इसी नदी के तट पर राम को मिलता है।[38]
वायु पुराण में इस नदी की उत्पत्ति सह्यपर्वत से बतायी गई है।[39]
वर्तमान में भी यह नदी दक्षिण भारत के त्रयम्बक पर्वत से निकलकर पूर्व–दक्षिण दिशा की ओर बहती हुई बंगाल की खाड़ी में गिरती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. महा. भीष्म.– 9.14–36
2. महा. भीष्म.– 9.38
3. महा. वन.– 109.5–6
4. वही, 144, पृ. 464
5. महा. आदि.– 169.19
6. वही, 169.21–22
7. वही, 127.54
8. वही, 169.17
9. महा. आदि.– 169.23
10. महा. वन.– 109.19
11. बृह्मवैवर्त पुराण में खगोल एवं भूगोल निरूपण, पृ. 186
12. महा. आदि.– 100.45
13. वही, 169.20
14. महा. आदि.– 104.7–8
15. वही, 104.13
16. श्रीमद्भगवत पुराण, 10.3.50
17. महा. वन.– 27.18–19
18. बृह्मवैवर्त पुराण में खगोल एवं भूगोल निरूपण, पृ. 186
19. महा. सभा – 38, पृ. 925
20. ऋग्वेद – 10/75/5
21. महा. शल्य पर्व – 35 से 54 तक
22. महा. वन.– 12.14
23. महा. वन.– 82.60–61
24. महा. शल्य.– 38.3–4
25. वही, 38.19
26. वही, 38.20–21
27. वही, 38.25
28. महा. शल्य., 38.26
29. वही, 38.27–28
30. वही, 38.29
31. वही, 38.31
32. इम्पीरियल गजेटियर ऑपफ इण्डिया, प्लेट – 26, 32ँ ओल्डम – जर्नल ऑफ द एशियाटिक सोसायटी, पृ. 25, 44, 76
33. महा. शल्य.– 37.1
34. महा. भीष्म.– 9.14
35. महा. वन.– 118.3
36. महा. वन., 83.43
37. वचनेश त्रिपाठी, गोदावरी की खोज, पृ. 157
38. प्रकृति खण्ड, 14–46
39. वायु पुराण, 45/104